# आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष-11 अंक-3/4 मई/जुलाई-2017


शोध प्रपत्र


कर्त्तव्य शिक्षा : विवेकानन्द -डॉ0 मनोज कुमार अग्निहोत्री 1-3

सामाजिक यथार्थ अवधारणा और स्वरूप -डॉ0 रमा पद्मजा वेदुला 4-7

माधवी नाटक में स्त्री-विमर्श -डॉ0 नमिता जैसल 8-12

हिन्दी नवजागरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी -विजयलक्ष्मी 13-17

कर्मभूमि उपन्यास की आधुनिक युग में प्रासंगिकता : एक समीक्षा -पाल सिंह 18-22

"साहित्य सृजन की सशक्त अभिव्यक्ति मिथक" -हरिकेश मीना 23-25

समकालीन कला -रवि प्रकाश सिंह 26-30

राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत भारतीय चित्र एवं चित्रकार -डॉ0 रश्मि शर्मा 31-33

दारा शिकोह के आध्यात्मिक विचार -डॉ0 स्मृति भटनागर 34-37

गुप्तकाल में धातु उद्योग -डॉ0 विजया तिवारी 38-39

मालेगाँव तहसिल में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' -प्रा0 खैरनार कैलास कारभारी 40-42

मध्यप्रदेश की दरबारी परम्परा -डॉ0 निधि श्रीवास्तव 43-44

में पिछड़े वर्गों की आरक्षण नीति से आम नागरिकों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन -डॉ0 प्रदीप कुमार भिमटे 45-52

हिन्दू विवाह : एक संस्थागत संस्कार के रूप में -एकता 53-56

योजनाओं से विलुप्त होतीं भावनाएं -श्वेता अग्रवाल 57-59

मालेगाँव के कपड़ा उद्योग में या0ना0 जाधव का कार्य -प्रा0 खैरनार कैलास कारभारी 60-63

भ्रष्टाचार : देश के लिए नासूर -डॉ0 सीमा रानी 64-66

महाकवि माघ का पाण्डित्य -विशाल पाण्डेय 67-71

रससिद्धान्त का इतिहास -अखिलेश नारायण मिश्र 72-74

निर्मल वर्मा कृत उपन्यास 'अन्तिम अरण्य' : एक अध्ययन -डॉ0 आशा वर्मा 75-87



प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777



Scanned with OKEN Scanner

पत्रावली संख्या V-34564, पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध सम्प्र पत्रिका (2017) 11,34-37
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 01 जून 2017

# दारा शिकोह के आध्यात्मिक विचार

डॉ० स्मृति भटनागर*

## लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित *दारा शिकोह के आध्यात्मिक विचार* शीर्षक लेख/ शोध प्रपत्र की लेखिका मैं *स्मृति भटनागर* घोष करती हूँ कि लेखिका के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेती हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और स ही अपने लेख/ शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देती हूँ। यह लेख/ शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश क और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इस छपने के लिये भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध प्रपत्र आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने ले के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देती हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देती हूँ।

मुगल साम्राज्य का गुले–अव्वलीने–गुलिस्तान ए आही दारा शिकोह वास्तव में भारत की आध्यात्मिक धार्मिक परम्परा की विरास का संवाहक था यद्यपि वह मयूर सिंहासन को प्राप्त करने में असफल रहा परन्तु भारत जैसे विभिन्न धार्मिक–आध्यात्मिक विचा वाले समाज में आज भी अपनी उदारवादी धार्मिक विचारधारा के फलस्वरूप दारा शिकोह भारतीयों का हृदय सम्राट है दारा शिको के धार्मिक विचार एवं दृष्टिकोण (वहदत–उल–वुजूद) आज भी सार्वभौमिक है प्रासंगिक है, इतिहास साक्षी है कि यदि एक विशा और शक्तिशाली साम्राज्य के लिए एक औरंगजेब की आवश्यकता है तो एक सुरक्षित और समृद्ध शान्ति–अमन के अंबर त फलते–फूलते वृहद साम्राज्य के लिए एक दारा शिकोह अनिवार्य है आज के सन्दर्भ में दारा शिकोह के धार्मिक विचारों ए दृष्टिकोण का अध्ययन सामयिक हो जाता है दारा स्वभाव से सादगीपूर्ण था एवं सत्य की खोज में डूबता उतरता रहा विपरी परिस्थितियों में भी मानव मूल्यों की खोज में रहा, वास्तव में दारा शिकोह जीवन पर्यन्त एक विद्यार्थी रहा यदि शाहजहाँ सिकन्द से प्रभावित था तो दारा शिकोह अरस्तु से, २० मार्च १६१५ को जन्में दारा शिकोह की शिक्षा–दीक्षा मुगल रवायत के अनुसा बा मकतब रफ्तन आरंभ हुई[1] अब्दुल लतीफ उसके प्रथम शिक्षक थे जिनसे दारा ने कुरान, तैमूर का इतिहास तथा फारसी काव्य की शिक्षा ग्रहण की तत्कालीन इस्लामिक शिक्षा पद्धति में खुशखती (सुलेख) पर अधिक बल दिया जाता था अत: दारा ने स सभी शिक्षायें प्राप्त की परन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य ये है कि दारा ने अब्दुल लतीफ के माकूलात रुझान अपने स्वभाव म आत्मसात कर लिए १७वीं शताब्दी के मध्य तक हिन्दुस्तान के इस्लामिक विचारों में परिवर्तन हो रहे थे एक ओर अकबर के समन्वयवादी विचार थे जिनके मार्गदर्शक विद्वान शैख अहमद सरहिन्दी थे, दारा के विचारों के अध्ययन के लिए यह पृष्ठभूमि अति महत्वपूर्ण है दारा शिकोह स्वभावत: आध्यात्मिक प्रवृति का इन्सान था भारतीय इस्लामिक जगत का भी इन दो विचारधाराओं में ध्रुवीकरण हो रहा था, अपने आध्यात्मिक विकास के आरंभिक चरण में दारा कादिरी सिलसिले का रुढ़िवादी रहस्यवादी सूफी था वह कादिरी सूफी मिया मी तथा मुल्लाशाह बदक्शी का मुरीद था, यदि शाहजहाँ के दरबारी इतिहासकार अब्दुल हमीद की मानें तो इस दौरान राजकुमार दारा सूफी संतो की गहरी संगत करने लगा संतों की कुटियों में जाने लगा लाहौर

* एसोसिएट प्रोफेसर, बी०के०एम०, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) भारत



Scanned with OKEN Scanner

जनवरी-जून २०१८
वर्ष-६ अंक-१
ISSN 2347-8373

# सार्क अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

अर्द्धवार्षिक पत्रिका

PEER REVIEWED ,REFEREED, LISTED IN UGC WITH SERIAL NUMBER 46911

एम.पी.ए.एस.वी.ओ. द्वारा सार्क
सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित

Scanned with OKEN Scanner

# सार्क

## अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

वर्ष-6 अंक-1 जनवरी-जून 2018


शोध प्रपत्र


भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति : एक समीक्षात्मक अध्ययन -अर्चना सिंह 1-4

मत्स्य न्याय का विरोध एवं धर्म : एक संक्षिप्त अध्ययन -श्रीमती नीतू सिंह 5-11

स्कंदगुप्त के उत्तराधिकारियों का क्रम निर्धारण : एक शोध -डॉ0 राम कुमार 12-23

रामायण की उपजीव्यता -डॉ0 अंशुमाला मिश्रा 24-25

विधिवेत्ताओं तथा पैगम्बर साहब के मत में "इज्मा" : एक अवलोकन -श्रीमती सरिता आज़ाद 26-27

राजा का दैवीकरण -श्रीमती नीतू सिंह 28-33

अनुभूति : अभिव्यक्ति और भगवान महावीर -प्रो0 संगीता जैन 34-38

डॉ0 एनी बेसेन्ट का भारत को सांस्कृतिक एवं सामाजिक योगदान - एक समीक्षा -डॉ0 स्मृति भटनागर 39-41

सल्तनत कालीन सूफी सन्त पीर एवं सन्यासी : उलेमा-ए-आखिरत के संदर्भ में -श्रीमती सरिता आज़ाद 42-43

प्राचीन भारत में शिक्षा एवं साहित्य -डॉ0 राम कुमार 44-48

अपभ्रंश साहित्य में मिथकीय संदर्भ -डॉ0 नीतू दुबे 49-50

रीतिकाव्य में श्रृंगारिकता -डॉ0 अंशुमाला मिश्रा 51-54

घाघरा-गंडक दोआब में शिक्षा एवं विकास की स्थानिक प्रतिरूप -डॉ0 उषा सिंह 55-64

लिंग असमानता के विभिन्न कारण एवं इनके नकारात्मक परिणाम एवं निदान -डॉ0 पुष्पांजलि 65-69

प्रजातांत्रिक नागरिक के निर्माण में शिक्षा की भूमिका -कृष्ण मोहन पाण्डेय 70-75

भारत-इज़रायल सम्बन्ध विकास के नए दौर में -डॉ0 सीमा रानी 76-79

महर्षि व्यास : स्तोत्र के परिप्रेक्ष्य में -डॉ0 आशीष कुमार 80-81

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का ग्रामीण विकास में योगदान का मूल्यांकन -डॉ0 पुनीत कुमार श्रीवास्तव 82-88

जॉन डीवी के नागरिक सम्बन्धी विचार -कृष्ण मोहन पाण्डेय 89-90



प्रिंट ISSN 2347-8373, वेबसाइट ISSN 2347-8373



Scanned with OKEN Scanner

पत्रावली संख्या V-34964, पंजीकरण संख्या 133/2007-2008
सार्क ISSN 2347-8373

अन्तर्राष्ट्रीय शोध सार पत्रिका (2018) 6,39-41
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 02 अप्रैल 2018

# डॉ० एनी बेसेन्ट का भारत को सांस्कृतिक एवं सामाजिक योगदान - एक समीक्षा

डॉ० स्मृति भटनागर*

## लेखक का घोषणा-पत्र

अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका सार्क में प्रकाशनार्थ प्रेषित डॉ० एनी बेसेन्ट का भारत को सांस्कृतिक एवं सामाजिक योगदान - एक समीक्षा शीर्षक लेख/ शोध पत्र की लेखिका मैं स्मृति भटनागर घोषणा करती हूँ कि लेखिका के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियो की जिम्मेदारी लेती हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और इसका सत्य मेरा है और साथ ही अपने लेख/ शोध पत्र को शोध पत्रिका सार्क में प्रकाशित होने की स्वीकृति देती हूँ। मैं शोध पत्रिका सार्क के सम्पादक को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देती हूँ। सार्क में लेख प्रकाशित होने पर इसके कॉपीराइट का अधिकार सम्पादक को है।

डॉ० एनी बेसेन्ट का भारतीय रैनेसां के समाज सुधारक नेताओ में एक विशिष्ट स्थान है आइरिश मूल की इस महिला का संबंध एक रूढ़िवादी कैथोलिक परिवार से था किन्तु उनका मन सदैव बेचैन रहता था आरम्भ से ही वे धर्म की बातो पर संदेह करने लगी थी उनका विवाह भी एक Catholic Clergyman फ्रेंक बेसेन्ट से हुआ था विवाह के पश्चात प्रश्न-तर्क बढ़ते गए और द्वन्द भी बढ़ते गए आखिरकार इसकी परिणति दोनो के संबंध विच्छेद में हुई डॉ० एनी बेसेन्ट गीता, उपनिषद् तथा अन्य हिन्दू धर्म-ग्रन्थों का अध्ययन करती रहीं हिन्दू धर्म की ओर झुकाव बढ़ता चला गया इसी बीच वे थियोसोफिकल सोसायटी की संस्थापक मैडम ब्लावात्स्की तथा कर्नल ऑलकॉट के संपर्क मे आईं मैडम ब्लावात्स्की की प्रसिद्ध पुस्तक Secret of Doctrine की समीक्षा लिखी 1882 में ब्लावात्स्की के न्यौते पर वे थियोसोफिकल सोसायटी की सक्रिय सदस्य बन गयी। इसी वर्ष सोसायटी के हेड क्वार्टर मद्रास में अडयार आ गयी तथा भारत मे बस गयी इस प्रकार भारत आने के पूर्व ही वे भारतीय बन चुकी थी।

सोसाइटी की एक सक्रिय सदस्य के रूप में समाज के महत्वपूर्ण क्षेत्रो में समाज सुधारक के रूप में कार्य करती रहीं वस्तुतः उनका औपनिवेशिक भारत के लिए काम करना था समाज के सभी धर्मों और वर्गों के प्रति उनका एक समान दृष्टिकोण था डॉ० एनी बेसेन्ट यूनीवर्सल ब्रदर हुड (Universal Brotherhood) की स्थापना करना विशेष रूप से इंग्लैण्ड और भारत के यूनीवर्सल ब्रदर हुड की स्थापना करना चाहती थी जिसका आधार वे प्राचीन हिन्दू विचार था कि सभी धर्मों का आविर्भाव ईश्वर से होता है और सभी धर्मों का विलय ईश्वर में ही होता है गीता में भगवान के अवतार भी समय-समय पर त्राणकर्ता के रूप में पाये जाते हैं। अतः इस सत्य के आधार पर समाज में सभी धर्मावलम्बियों को समान भाव से भाई के रूप में रहना चाहिए सहिष्णुता, उदारता तथा जियो और जीने दो की भावना से रहना चाहिए तभी एक अखिल एकीकृत भारत का निर्माण हो सकेगा।

डॉ0 एनी बेसेन्ट भारत में आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की स्थापना की पक्षधर थी, वो भारत को आध्यात्मिक रूप से एक अखिल

* एसोसिएट प्रोफेसर, [illegible]

जनवरी-जून २०१८
वर्ष-६ अंक-१
ISSN 2347-8373

# सार्क अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

अर्द्धवार्षिक पत्रिका

PEER REVIEWED ,REFEREED, LISTED IN UGC WITH SERIAL NUMBER 46911

एम.पी.ए.एस.वी.ओ. द्वारा सार्क
सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित

Scanned with OKEN Scanner

# सार्क

## अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

वर्ष-6 अंक-1 जनवरी-जून 2018


शोध प्रपत्र


भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति : एक समीक्षात्मक अध्ययन -अर्चना सिंह 1-4

मत्स्य न्याय का विरोध एवं धर्म : एक संक्षिप्त अध्ययन -श्रीमती नीतू सिंह 5-11

स्कंदगुप्त के उत्तराधिकारियों का क्रम निर्धारण : एक शोध -डॉ0 राम कुमार 12-23

रामायण की उपजीव्यता -डॉ0 अंशुमाला मिश्रा 24-25

विधिवेत्ताओं तथा पैगम्बर साहब के मत में "इज्मा" : एक अवलोकन -श्रीमती सरिता आज़ाद 26-27

राजा का दैवीकरण -श्रीमती नीतू सिंह 28-33

अनुभूति : अभिव्यक्ति और भगवान महावीर -प्रो0 संगीता जैन 34-38

डॉ0 एनी बेसेन्ट का भारत को सांस्कृतिक एवं सामाजिक योगदान - एक समीक्षा -डॉ0 स्मृति भटनागर 39-41

सल्तनत कालीन सूफी सन्त पीर एवं सन्यासी : उलेमा-ए-आखिरत के संदर्भ में -श्रीमती सरिता आज़ाद 42-43

प्राचीन भारत में शिक्षा एवं साहित्य -डॉ0 राम कुमार 44-48

अपभ्रंश साहित्य में मिथकीय संदर्भ -प्रो0 नीतू दुबे 49-50

रीतिकाव्य में श्रृंगारिकता -डॉ0 अंशुमाला मिश्रा 51-54

घाघरा-गंडक दोआब में शिक्षा एवं विकास का स्थानिक प्रतिरूप -डॉ0 ऊषा सिंह 55-64

लिंग असमानता के विभिन्न कारण एवं इनके नकारात्मक परिणाम एवं निदान -डॉ0 पुष्पांजलि 65-69

प्रजातांत्रिक नागरिक के निर्माण में शिक्षा की भूमिका -कृष्ण मोहन पाण्डेय 70-75

भारत-इजरायल सम्बन्ध विकास के नए दौर में -डॉ0 सीमा रानी 76-79

महर्षि व्यास : स्तोत्र के परिप्रेक्ष्य में -डॉ0 आशीष कुमार 80-81

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का ग्रामीण विकास में योगदान का मूल्यांकन -डॉ0 पुनीत कुमार श्रीवास्तव 82-88

जॉन डीवी के नागरिक सम्बन्धी विचार -कृष्ण मोहन पाण्डेय 89-92



प्रिंट ISSN 2347-[illegible], वेबसाइट ISSN 2347-[illegible]



Scanned with OKEN Scanner

[illegible] संख्या U-34964, [illegible] संख्या 133/2007-2008
[illegible] ISSN 2347-8373

अन्तर्राष्ट्रीय शोध [illegible] पत्रिका (2018) 6, 39-41
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 02 अप्रैल 2018

# डॉ० एनी बेसेन्ट का भारत को सांस्कृतिक एवं सामाजिक योगदान - एक समीक्षा

डॉ० स्मृति भटनागर*

लेखक का घोषणा-पत्र

अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका सार्क मे प्रकाशनार्थ प्रेषित डॉ० एनी बेसेन्ट का भारत को सांस्कृतिक एवं सामाजिक योगदान - एक समीक्षा शीर्षक लेख/ शोध पत्र की लेखिका मैं स्मृति भटनागर घोषणा करती हूँ कि लेखिका के रूप मे इस लेख की सभी सामग्रियो की जिम्मेदारी लेती हूँ, क्योंकि मैने स्वयं इसे लिखा और [illegible] है और साथ ही अपने लेख/ शोध पत्र को शोध पत्रिका सार्क मे प्रकाशित होने की स्वीकृति देती हूँ। मैं शोध पत्रिका सार्क के सम्पादक को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देती हूँ। सार्क मे लेख प्रकाशित होने पर इसके कॉपीराइट का अधिकार सम्पादक को है।

डॉ0 एनी बेसेन्ट का भारतीय रैनेसां के समाज सुधारक नेताओ में एक विशिष्ट स्थान है आइरिश मूल की इस महिला का संबंध एक [illegible] कैथोलिक परिवार से था किन्तु उनका मन सदैव बेचैन रहता था आरम्भ से ही वे धर्म की बातो पर संदेह करने लगी थीं उनका विवाह भी एक Catholic Clergyman फ्रेंक बेसेन्ट से हुआ था विवाह के पश्चात प्रश्न-तर्क बढ़ते गए और द्वन्द भी बढ़ते गए आखिरकार इसकी परिणति दोनो के संबंध विच्छेद में हुई डॉ0 एनी बेसेन्ट गीता, उपनिषद् तथा अन्य हिन्दू धर्म-ग्रन्थो का अध्ययन करती रहीं हिन्दू धर्म की ओर झुकाव बढ़ता चला गया इसी बीच वे थियोसोफिकल सोसायटी की संस्थापक मैडम ब्लावात्स्की तथा कर्नल ऑलकॉट के संपर्क मे आई मैडम ब्लावात्स्की की प्रसिद्ध पुस्तक Secret of Doctrine की समीक्षा लिखी [illegible] मे ब्लावात्स्की के न्यौते पर वे थियोसोफिकल सोसायटी की सक्रिय सदस्य बन गयी। इसी वर्ष सोसायटी के हैड क्वार्टर भारत में [illegible] आ गयी तथा भारत में बस गयी इस प्रकार भारत आने के पूर्व ही वे भारतीय बन चुकी थीं।

सोसाइटी की एक सक्रिय सदस्य के रूप मे समाज के महत्वपूर्ण क्षेत्रो मे समाज सुधारक के रूप मे कार्य करती रहीं वस्तुतः [illegible] औपनिवेशिक भारत के लिए काम करना था समाज के सभी धर्मो और वर्गो के प्रति उनका एक समान दृष्टिकोण था डॉ0 एनी बेसेन्ट यूनीवर्सल ब्रदर हुड (Universal Brotherhood) की स्थापना करना विशेष रूप से इंग्लैण्ड और भारत के यूनीवर्सल ब्रदर हुड की स्थापना करना चाहती थी जिसका आधार वो प्राचीन हिन्दू विचार था कि सभी धर्मों का आर्विभाव ईश्वर से होता है और सभी धर्मों का विलय ईश्वर में ही होता है गीता में भगवान के अवतार भी समय-समय पर त्राणकर्ता के रूप में पाये जाते हैं अतः इस सत्य के आधार पर समाज में सभी धर्मावलम्बियों को समान भाव से भाई के रूप में रहना चाहिए सहिष्णुता, उदारता तथा जियो और जीने दो की भावना से रहना चाहिए तभी [illegible] अखिल एकीकृत भारत का निर्माण हो सकेगा।

डॉ0 एनी बेसेन्ट भारत में आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की [illegible] की पक्षधर थीं, वो भारत को आध्यात्मिक रूप से एक [illegible]

* [illegible] कन्या महाविद्यालय [illegible]

# आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष-11 अंक-3/4 मई/जुलाई-2017

शोध प्रपत्र

कर्त्तव्य शिक्षा : विवेकानन्द -डॉ0 मनोज कुमार अग्निहोत्री 1-3
सामाजिक यथार्थ अवधारणा और स्वरूप -डॉ0 रमा पद्मजा वेदुला 4-7

माधवी नाटक में स्त्री-विमर्श -डॉ0 नमिता जैसल 8-12
हिन्दी नवजागरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी -विजयलक्ष्मी 13-17

कर्मभूमि उपन्यास की आधुनिक युग में प्रासंगिकता : एक समीक्षा -पाल सिंह 18-22
''साहित्य सृजन की सशक्त अभिव्यक्ति मिथक'' -हरिकेश मीना 23-25

समकालीन कला -रवि प्रकाश सिंह 26-30
राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत भारतीय चित्र एवं चित्रकार -डॉ0 रश्मि शर्मा 31-33

दारा शिकोह के आध्यात्मिक विचार -डॉ0 स्मृति भटनागर 34-37
गुप्तकाल में धातु उद्योग -डॉ0 विजया तिवारी 38-39

मालेगाँव तहसिल में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' -प्रा0 खैरनार कैलास कारभारी 40-42
मध्यप्रदेश की दरबारी परम्परा -डॉ0 निधि श्रीवास्तव 43-44

में पिछड़े वर्गों की आरक्षण नीति से आम नागरिकों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन -डॉ0 प्रदीप कुमार भिमटे 45-52
हिन्दू विवाह : एक संस्थागत संस्कार के रूप में -एकता 53-56

योजनाओं से विलुप्त होतीं भावनाएं -श्वेता अग्रवाल 57-59
मालेगाँव के कपड़ा उद्योग में या0ना0 जाधव का कार्य -प्रा0 खैरनार कैलास कारभारी 60-63

भ्रष्टाचार : देश के लिए नासूर -डॉ0 सीमा रानी 64-66
महाकवि माघ का पाण्डित्य -विशाल पाण्डेय 67-71

रससिद्धान्त का इतिहास -अखिलेश नारायण मिश्र 72-74
निर्मल वर्मा कृत उपन्यास 'अन्तिम अरण्य' : एक अध्ययन -डॉ0 आशा वर्मा 75-87

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

Scanned with OKEN Scanner

पत्रावली संख्या V-34564, पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध समय पत्रिका (2017) 11,34-37
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 01 जून 2017

# दारा शिकोह के आध्यात्मिक विचार

डॉ० स्मृति भटनागर*

## लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित *दारा शिकोह के आध्यात्मिक विचार* शीर्षक लेख/ शोध प्रपत्र की लेखिका मैं *स्मृति भटनागर* घोष
करती हूँ कि लेखिका के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेती हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और स
ही अपने लेख/ शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देती हूँ। यह लेख/ शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश क
और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इस छपने के लिये भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध प्रपत्र आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने ले
के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देती हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देती हूँ।

मुगल साम्राज्य का गुले–अव्वलीने–गुलिस्तान ए आही दारा शिकोह वास्तव में भारत की आध्यात्मिक धार्मिक परम्परा की विरास
का संवाहक था यद्यपि वह मयूर सिंहासन को प्राप्त करने में असफल रहा परन्तु भारत जैसे विभिन्न धार्मिक–आध्यात्मिक विचा
वाले समाज में आज भी अपनी उदारवादी धार्मिक विचारधारा के फलस्वरूप दारा शिकोह भारतीयों का हृदय सम्राट है दारा शिको
के धार्मिक विचार एवं दृष्टिकोण (वहदत–उल–वुजूद) आज भी सार्वभौमिक हैं प्रासंगिक है, इतिहास साक्षी है कि यदि एक विशा
और शक्तिशाली साम्राज्य के लिए एक औरंगजेब की आवश्यकता है तो एक सुरक्षित और समृद्ध शान्ति–अमन के अंबर त
फलते–फूलते वृहद साम्राज्य के लिए एक दारा शिकोह अनिवार्य है आज के सन्दर्भ में दारा शिकोह के धार्मिक विचारों ए
दृष्टिकोण का अध्ययन सामयिक हो जाता है दारा स्वभाव से सादगीपूर्ण था एवं सत्य की खोज में डूबता उतरता रहा विपरी
परिस्थितियों में भी मानव मूल्यों की खोज में रहा, वास्तव में दारा शिकोह जीवन पर्यन्त एक विद्यार्थी रहा यदि शाहजहाँ सिकन्द
से प्रभावित था तो दारा शिकोह अरस्तु से, २० मार्च १६१५ को जन्में दारा शिकोह की शिक्षा–दीक्षा मुगल रवायत के अनुसा
बा मकतब रफतन आरंभ हुई।[1] अब्दुल लतीफ उसके प्रथम शिक्षक थे जिनसे दारा ने कुरान, तैमूर का इतिहास तथा फारसी काव
की शिक्षा ग्रहण की तत्कालीन इस्लामिक शिक्षा पद्धति में खुशखती (सुलेख) पर अधिक बल दिया जाता था अतः दारा ने
सभी शिक्षायें प्राप्त की परन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य ये है कि दारा ने अब्दुल लतीफ के माकूलात रुझान अपने स्वभाव
आत्मसात कर लिए १७वीं शताब्दी के मध्य तक हिन्दुस्तान के इस्लामिक विचारों में परिवर्तन हो रहे थे एक ओर अकबर
समन्वयवादी विचार थे जिनके मार्गदर्शक विद्वान शैख अहमद सरहिन्दी थे, दारा के विचारों के अध्ययन के लिए यह पृष्ठभूमि
अति महत्वपूर्ण है दारा शिकोह स्वभावतः आध्यात्मिक प्रवृत्ति का इन्सान था भारतीय इस्लामिक जगत का भी इन दो
विचारधाराओं में ध्रुवीकरण हो रहा था, अपने आध्यात्मिक विकास के आरंभिक चरण में दारा कादिरी सिलसिले का रुढ़िवादी
रहस्यवादी सूफी था वह कादिरी सूफी मिया मी तथा मुल्लाशाह बदक्शी का मुरीद था, यदि शाहजहाँ के दरबारी इतिहासकार
अब्दुल हमीद की मानें तो इस दौरान राजकुमार दारा सूफी संतो की गहरी संगत करने लगा संतों की कुटियों में जाने लगा लाहौर

* एसोसिएट प्रोफेसर, बी०के०एम०, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) भारत



Scanned with OKEN Scanner